International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(II), April- June, 2026, pp. 171-175

आधुनिक भारतीय चित्रकला में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप का योगदान

डॉ. विजेयता चारण*

सहायक आचार्य, चित्रकला, राजकीय मूक बधिर महाविद्यालय, जयपुर।

*Corresponding Author: vijeyta29@gmail.com

Citation: चारण, विजेयता (2026). आधुनिक भारतीय चित्रकला में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप का योगदान. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(II)), 171–175. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2(II).9099

सार

कलाओं में चित्रकला का इतिहास अगर देखें तो मुख्य रूप से यह चित्रकारों द्वारा कला सम्बन्धी दृष्टिकोण में हुए बदलाव का इतिहास है। हालांकि चित्रकला का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मनुष्य सभ्यता का इतिहास है। योरोपीय पुनर्जागरण ने मनुष्य जीवन के विविध पक्षों पर प्रभाव डाला। चित्रकला इससे अछूती कैसे रह सकी है। अतः चित्रकला में वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा अपनी पद्धति में परिवर्तन किये तो उसकी कलाकृति में भौतिक सौन्दर्य, सृष्टि के सच्चे रूप का अंकन नए मापदण्ड बने।

शब्दकोशः *भारतीय चित्रकला, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भौतिक सौन्दर्य, पुनर्जागरण।*

प्रस्तावना

भारतीय और यूरोपियन कला पद्धति से चित्रकला को एक नवीन आयाम जरूर मिला लेकिन भारतीय चित्रकला पर इसका क्या नकारात्मक असर पड़ा इसको रेखांकित करते हुए काजल कांजीलाल लिखती हैं – "बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक भाग में दीर्घकालिक उपनिवेशीय शासन और तथाकथित अंग्रेज आलोचकों एवं चित्रकारों ने लोगों में यह विश्वास भर दिया कि भारतीय पारंपरिक कला में कोई खूबी (गुण) नहीं है तथा इसकी कोई परंपरा (विरासत) भी नहीं है। भारत के सामंतवादी शासक तथा उनके न्यायालय पूर्णरूप से अपनी अंग्रेजी संस्कृति में बह गए तथा भारतीय संस्कृति को नीचा दिखाने में लग गए। 1

इस विकट समय में कुछ महान चित्रकार जैसे – राजा रवि वर्मा, अवींद्रनाथ टैगोर तथा दूसरे भारतीय सृजनात्मक कला के आत्मगौरव को फिर से स्थापित करने के लिए भरसक प्रयत्न करने लगे। राजा रवि वर्मा ने ऐसे चित्र बनाए जिनके प्रति भारतीयों की अगाध आस्था थी, अतः इनकी कृतियां आज भी प्रसिद्ध है

उन्नीसवीं सदी के मध्य में भारतीय विद्यार्थियों को यूरोपियन चित्रकला का ज्ञान देने के लिए मद्रास, कलकत्ता, मुम्बई और लाहौर में कला विद्यालय खोले गये व वहां नैसर्गिकवादी पद्धति से चित्रकारी करने वाले यूरोपियन चित्रकारों की निर्देशक के रूप में नियुक्ति हुई। इन कला विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा और प्रशिक्षण का वातावरण, सामग्री और कार्य प्रणाली सब कुछ यूरोपियन कला संस्थानों की तर्ज पर था।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

"आधुनिक कला न केवल अपने सुस्पष्ट गुणों को प्रतिबिंबित करती है बल्कि गहन स्रोतों से भी प्रभाव ग्रहण करती है मानव जाति में निहित मावतावादी गुणों तक से। आधुनिक कलाकार ने अंतर्ज्ञान के स्रोतों को पुनः अविष्कृत किया है।"2

आज के दौर में कलाकार की इस तरह की व्यक्तिपरकता अन्वेषण और शोध का विषय है और उसके केन्द्र में है समसामयिक मनुष्य, जो अपने आप में एक सम्पूर्ण विषय है।

भारत में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना 1936 ई. में हुई। इसका प्रभाव धीरे–धीरे साहित्य के साथ कला, राजनीति और अन्य क्षेत्रों में भी हुआ।

कला के प्रगतिवाद उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मुम्बई का सबसे महत्वपूर्ण 'प्रोग्रेसिव ग्रुप' था जिसकी स्थापा 1947 में हुई। इस ग्रुप में सैय्यद हैदर रजा मकबूल फिदा हुसैन और के.एच. आरा प्रमुख थे, इनकी कला का मुख्य उद्देश्य केवल परिवर्तन था। आधुनिक कला में समकालीन चित्रकला के विकास में दिल्ली शिल्प चक्र का अहम का योगदान रहा है। वर्ष 1949 में कुछ प्रगतिशील विचारों वाले चित्रकार समूह ने एक आर्ट सर्किल की स्थापना की जिसका उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी को आधुनिक कला प्रणालियों के साथ प्रशिक्षित करना था। इस आर्ट सर्किल में बी.सी. सान्याल, सतीश गुजराल, राम कुमार, धनराज भगत का योगदान प्रमुख रहा है। इस समूह में के.एस. कुलकर्णी, केवल कृष्ण, अजित गुप्ता, कृष्ण चंद्र आर्यन भी सक्रिय रूप से भागीदारी निभा रहे थे।

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप

कला की यह नई लहर भारतीय स्वतंत्रता के लिए उठी हुई एक देशव्यापी लहर थी। बंगाल शैली में जापानी तकनीक के कई प्रयोग थे और फारसी के लघुचित्रों को भी शामिल किया गया था। बाघ और अंजता के भित्तिचित्रों की प्रणाली को भी अपनाया था। अतः तथाकथित बंगाल शैली में एक विस्तृत पौर्वात्य कला आंदोलन का रूप ले लिया था जो राष्ट्रीयता की गहरी भावना का प्रतीक बन गई थी। यह शैली भारत में औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ उठे राजनैतिक विरोध के सांस्कृतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करने लगी थी।

कलकत्ता ग्रुप के संस्थापक सदस्य प्रदोष दासगुप्ता के अनुसार बंगाल शैली के कलाकरों ने इस बात पर कभी विचार नहीं किया कि देवी व देवताओं के बिंब और पौराणिक महाकाव्यों से लिए गये प्रसंग नई स्थितियों के लिए अनुकूल नहीं है, क्योंकि अब मनुष्य को उसकी केन्द्रीय भूमिका में महत्व मिलना चाहिए।

अतः बंगाल शैली की चित्रकला की कमियां वक्त गुजरने के साथ प्रकट होने लगी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि यह शैली और इस शैली की समस्त कृतियां जैसे रक्तहीन, क्षुधर्त और शक्तिहीन है। बाद के चित्रकार तो और खराब तरीके से प्रयुक्त करने लगे।

"कवि रविन्द्रनाथ टैगोर को इस बात का भरपूर अहसास था लेकिन प्रशिक्षित कलाकार न होने के कारण वह अपनी सलाह तथा आग्रह शब्दों के माध्यम से ही दे पाए जिसे अनसुना कर दिया गया। अतएव लगभग दस वर्षों के बाद ही, अपने विचारों की सच्चाई को मनवाने के लिए वह भी 69 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के बाद, वह 'आधुनिक युग के प्रामाणिक चित्रकार' के रूप में जाने गए। उनके रूपाकार तथा रंग की जीवंतता एवं अभिव्यक्ति क्षमता ने एक ऐसी चित्र भाषा को जन्म दिया, जो समकालीन संवेदना के मानदंडों पर पूरी उतरती थी।"3

रविन्द्रनाथ टैगोर ने चित्रकला में कई प्रयोग किए। उन्होंने रेखाओं के मिटाने पर जो अव्यवस्थित आकार बनते थे, उन पर नया प्रयोग किया।

"इन स्वयंसिद्ध आकारों के प्रति वे इतना मोहित हुए कि उन्होंने आकारों के विकास पर ध्यान दिया। भारतीय कला के इतिहास में यह अभूतपूर्व प्रयोग था। उन्होंने कपड़े के टुकड़े या अंगुलियों को स्याही में डूबोकर

चित्रण शुरू किया और बाद में सीमित रंगों का उपयोग किया। रविन्द्रनाथ ने परम्परावादी व यथार्थवादी चित्रकला का पल्लू न पकड़कर शैली को अपनाया, जिसे उन्होंने समन्वयात्मक शैली कहा।"4

बंगाली शैली की रीति से अलगाव करने वाले एक अन्य चित्रकार गगनेन्द्र नाथ टैगोर थे। उन्होंने रहस्यवाद की प्राच्य धारणा और घनवाद की आकारिक संरचना में संयोजन किया और एक नवीन राह की खोजी की।

बंगाल पुनर्जागरण जैसे कि नाम से प्रतीत होता है, भारतीय कला में रिनेंसा लाने का दावा करता था लेकिन किन्हीं कारणों से अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के बजाय भारतीय चित्रकला में व्याप्त ठहराव के लिए जिम्मेदार बना, लेकिन उसी ठहराव से बाहर निकलने के लिए उसके कालकारों ने आधुनिक पश्चिमी कला से प्रेरणा लेकर अभिव्यक्ति के नये आयाम तलाशे और एक नये कला आंदोलन को जन्म दिया जिसे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के नाम से जाना जाता है।

अन्य प्रोग्रेसिव ग्रुप

- **कलकत्ता ग्रुप**

अमृता शेरगिल की मृत्यु के बाद 1942–43 में कलकत्ता में आठ कलाकारों ने मिलकर एक ग्रुप की स्थापना की जिसकी विचारधारा उनसे मिलती थी। इन कलाकारों में – नीरोद मजुमदार, शुभो टैगोर, गोपाल घोष, परितोष सेन, रथिन मोएत्रा, प्राण कृष्ण पाल, प्रदोष दास गुप्ता और कामला दास गुप्ता। यह कला में आधुनिकता का आंदोलन प्रारम्भ होने की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम था। जो कवि और कलाकार इस ग्रुप से जुड़े उन्होंने इस ग्रुप को अपना पूर्ण सहयोग दिया, उनका राजनीतिक झुकाव प्रायः वामपंथी था। मुल्कराज आनंद अपनी पहली प्रदर्शनी के समय वर्ष 1944 में इस ग्रुप के करीब आए और प्रभावित हुए।

आरंभ के पश्चिम के प्रसिद्ध कलाकारों यथा पिकासो, मातीस, वान गॉग, वलामिन्क, ब्रॉक मूर, बांकुसी तथा अन्यों का कलकत्ता के सदस्यों की कला पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है "यह ग्रुप 1943 से 1953 तक अखिल भारतीय स्तर पर अवांगार्द आंदोलन चलाने में सक्रिय रहा। बुनियादी तौर पर यह ग्रुप परंपरा पर निर्भर करता था लेकिन अपने को बेहतर तथा पूरी तरह अभिव्यक्त करने के मामले में विदेशों से प्रभाव ग्रहण करने के प्रति इसका दृष्टिकोण उदार था। कलकत्ता ग्रुप के कलाकारों ने बंगाल की नास्टोल्जिक भावुकता से मुक्त होने की कोशिश की और एक नई विचारधारा का प्रचार किया जिसमें पूर्व और पश्चिम का संश्लेषण किया गया था।"5

- **बाम्बे प्रोगेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप**

आजादी के बाद मुंबई का कला परिदृश्य तेजी से परिवर्तित हुआ। सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में, जिसने युवा कलाकारों को दिशा–निर्देश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। "आजादी के तुरंत बाद मुंबई में आधुनिक भारतीय कला के सबसे बड़े आंदोलन प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप (पी.ए.जी.) की शुरूआत 1948 में हुई थी। इस ग्रुप के प्रारंभिक सदस्यों में चित्रकार एफ.एन. सूजा, के.एच. आरा, एम.एफ. हुसैन, एच.ए. गाडे, एस.एच. रजा और मूर्तिकार एस.के. बाकरे।"6

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप ने तब की ब्रिटिश अकादमिक शैली में कार्यकुशल होने की दिशा में कोई खास कोशिश नहीं की। अतः इस ग्रुप के बिखरने के बाद 'बांबे ग्रुप' नाम से एक नया ग्रुप उभरकर सामने आया, इसमें प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के कुछ पूर्व सदस्य भी शामिल थे। के.के. हेब्बार, के.एच. आरा, एच.ए. गाडे, एस. डी. चावड़ा, डी.जी. कुलकर्णी, वी.एस. गायतोंडे, मोहन सामंत, एस.वी. पल्सीकर, बाबूराव सादवलकर और हरकिशन लाल। यह ग्रुप 1957 से 1962 तक सक्रिय रहा और छह बड़ी प्रदर्शनियों द्वारा समकालीन संवेदना को अपनाते हुए पश्चिमी तत्वों के संश्लेषण की कोशिश की।

दिल्ली शिल्पी चक्र

कला के अभ्युत्थान में दिल्ली शिल्पी चक्र का अहम योगदान रहा है। मार्च, 1949 में प्रगतिशील विचारों के कुछ कलाकारों ने एक आर्ट सर्किल की स्थापना की जो नवीन अभिजात संस्कृति के विचारों और आधुनिक कला प्रणालियों की प्रतिक्रिया स्वरूप वर्तमान समय और परिस्थिति के साथ कुछ नया करने का उत्साह रखते थे। कुछ कलाकार लाहौर से दिल्ली आए थे और दिल्ली की आल इण्डिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स सोसायटी (आइफैक्स) के सदस्य बन गए लेकिन ज्यादा समय तक इससे नहीं जुड़े रहे।

"कंवल कृष्ण कुलकर्णी तथा मागो, जो आइफैक्स की साधारण सभा (1948–1949) के सदस्य थे, ने तत्काल वहां अपने–अपने त्यागपत्र दे दिए और इन्होंने भगत व सान्याल के साथ मिलकर 25 मार्च, 1949 को दिल्ली शिल्पी चक्र की स्थापना कर ली।"7

इस शिल्पी चक्र में जो कलाकार शामिल हुए उनमें हरकिशन लाल, के.सी. आर्यन, दमयंती चावला, दिनकर कौशिक, जयाअप्पा सामी, श्रीनिवास पंडित और ब्रज मोहन भमोट।

दिल्ली शिल्पी चक्र की शुरूआत, इस बात की प्रतीक थी कि युवा प्रगतिशील कलाकार बंगाल के कलाकारों के कलाकर्म में अभिव्यक्त लोकप्रिय प्रवृत्तियों से हटकर कुछ अलग काम करने के इच्छुक थे।

"अपनी सृजन अभिव्यक्ति में सामाजिक महत्व के विषयों को शामिल कर शिल्पी चक्र के कलाकारों ने समकालीन भारतीय कला के विकास में सार्थक भूमिका अदा की। आज इसका महत्व एक ऐसी घटना के रूप में आंका जाता है जिसका ऐतिहासिक महत्व है।8

मद्रास और चोलमंडल

यूरोपीय आधुनिक कला शैलियों के विकास के बाद 1950 के दशक में अमूर्त अभिव्यंजना शैली का जन्म हुआ, इसमें अनुभव और अन्तर्दृष्टि के आध्यात्म पक्ष पर विशेष जोर दिया गया था। इस शैली ने मद्रास के कलाकारों को जिन्हें देवी प्रसाद राय चौधुरी ने प्रभाववादी प्रयोगों के लिए प्रेरणास्रोत का काम किया था, अभिव्यंजनावाद के इस नवीन रूप ने प्रभावित किया। इन कलाकारों में सबसे महत्वपूर्ण के.सी. पणिक्कर थे जो रायचौधुरी के पश्चात् मद्रास के गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्रॉफ्ट के प्राचार्य बने थे।

"कला की दुनिया में एक अभूतपूर्व विकास यह हुआ कि पणिक्कर ने 1967 में मद्रास के बाहर इलाके में कलाकारों के एक गांव, चोलमंडल की स्थापना की। चित्रकार, मूर्तिकार तथा हस्तशिल्पी वहां जमीन खरीदकर रहने लगे, मनोनुकूल तथा उन्मुक्त वातावरण में रहते हुए काम करने लगे और अपनी कलाकृतियों के विक्रय से प्राप्त राशि पर निर्भर रहने लगे। जब ऐसे वातावरण में प्रतिभा तथा वैयक्तिकता का विकास होता है, तो इससे विविध निजी शैलियों का सामने आना स्वाभाविक है।"9

आजादी के बाद के समय में मूड तथा विचारधारा का समाहार हम इस ग्रुप के आर.बी. भास्करन की ग्राफिक कृतियों में देख सकते हैं जिसमें अतियथार्थपरक आकृतिमूलक कला की प्रधानता है। इनका मद्रास चोलमंडल ग्रुप के कलाकारों पर काफी समय तक प्रभाव रहा।

समकालीन भारतीय चित्रकला में जो कलाकृतियां निर्मित हुई उनमें गैर आकृतिमूलक शैली की हैं जिनका आकर्षण टेक्सचर तथा अमूर्तन की तरफ ज्यादा था। आकृतिमूलक शैलियों में मानवीय दशाओं के चित्रण पर बल है, वहीं ज्यामितिक शैली में मंडल परंपरा, यांत्रिक तत्व और ज्यामितिक रूपाकारों को प्रमुखता से चित्रित किया गया है।

कुछ युवा पीढ़ी के चित्रकारों ने काव्यात्मक रहस्यवाद को लेकर कल्पना की उड़ान भरी है जिनकी पेंटिंग को किसी खास लेबल से नहीं समझा जा सकता। इनका काम आकृतिमूलक अधिक है लेकिन इनमें अमूर्त तत्वों का सम्मिश्रण रहता है और कभी–कभी इनकी पूरी कृतियां पूरी तरह अमूर्त अभिव्यंजनावादी हो जाती है।

"1980 के दशक में कलाकारों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे थे। इस उत्तर आधुनिक युग में नई अंतर्दृष्टि व अभिव्यक्ति और शैलियां व ढांचे विकसित हो रहे थे। जब व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति तथा निजी प्रतीकों, सामाजिक–राजनीतिक व सांस्कृतिक पक्षों के विचित्र मिश्रण, वैयक्तिक फंतासी, जिसमें व्यंग्य या काव्यात्मक रहस्यवाद घुलामिला रहता है, के प्रयोग पर असाधारण बल दिया जाता रहा था।"10

एक कलाकार स्वयं को सर्जन मानकर जीवन के अनुभवों को रूपांतरित और प्रतिबिंबित करना चाहता है। लेकिन यह भी सत्य है कि कलाकार वस्तु के सार तत्व और चैतन्य को तभी व्यक्त कर सकता है जब आन्तरिक सत्य को आत्मसात् कर सके।

"समकालीन कलाकार इसी आन्तरिक रहस्य और चेतना शक्ति को पहचानने और उसे अपनी निजी मुहावरों से अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है।"11

आज हम जिस समकालीन कला के परिवेश में हैं जहां कला से संबंधित गतिविधियां अधिकाधिक बढ़ रही हैं विभिन्न शहरों में नई कला दीर्घायें स्थापित हुई हैं। नये चित्रकारों का काम भी सामने आने लगा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कांजिलाल, भारतीय कला का इतिहास, पृ.सं. 85 सरस्वती हाऊस प्राइवेट लिमिटेड, एजुकेशन पब्लिशर, नई दिल्ली, 2010
2. प्राणनाथ मागो, भारत की समकालीन कला, पृ.सं. 11 एक परिप्रेक्ष्य (अनुवाद सौमित्र मोहन) नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, 2011
3. वही, पृ.सं. 106
4. प्रेमचन्द गोस्वामी ,आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधारस्तम्भ, पृ.सं. 77 राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1995
5. प्राणनाथ मागो, भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य, पृ.सं. 66
6. विनोद भारद्वाज, बृहद आधुनिक कलाकोश, पृ.सं. 9 वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
7. मागो प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य, पृ.सं. 72
8. वही, पृ.सं. 75
9. वही, पृ.सं. 76
10. वही, पृ.सं. 106
11. राम मनोहर सिन्हा, समकालीन कला, अंक 17, मई, 1996, समकालीन कला के आयाम, पृ. सं. 26

❑❑❑